आठ हज़ार पत्थर

चीनी लोककथा

डायना, चित्र : एड, हिंदी : इंदु भूषण अरोड़ा
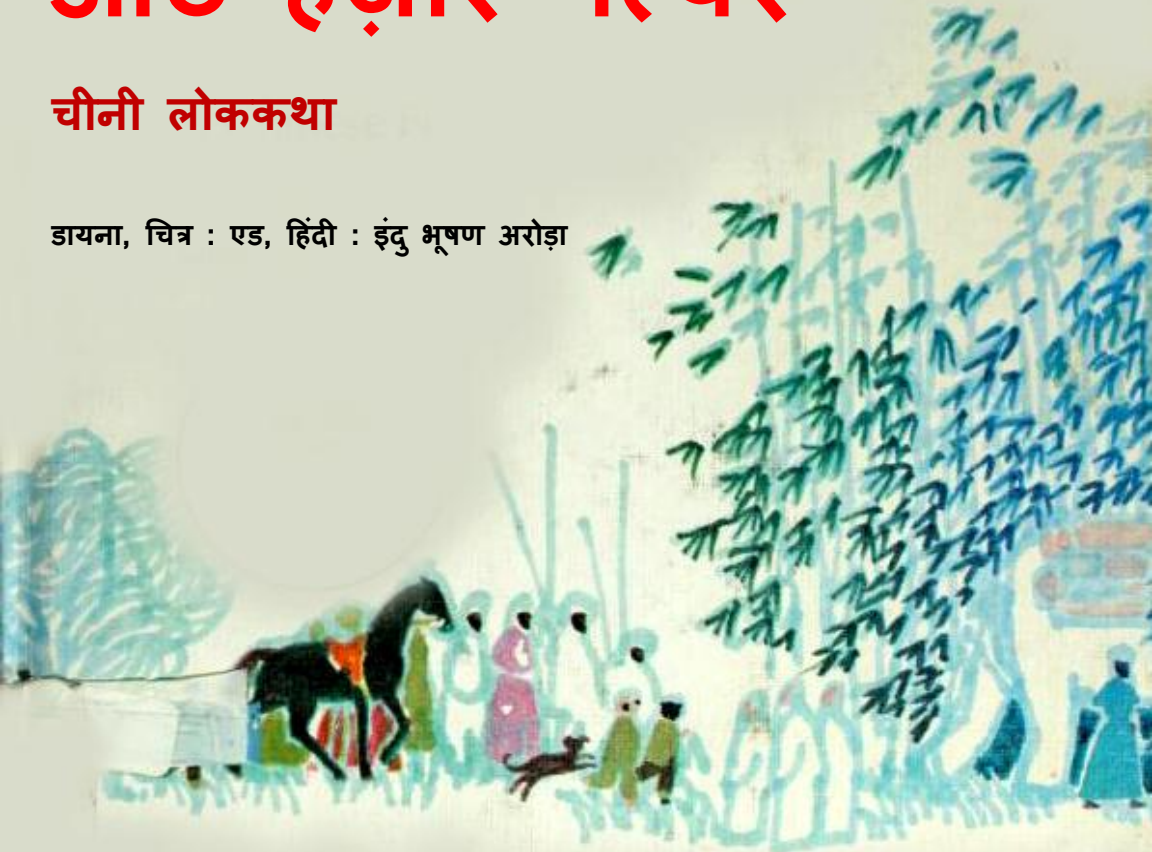
आठ हज़ार पत्थर

चीनी लोककथा
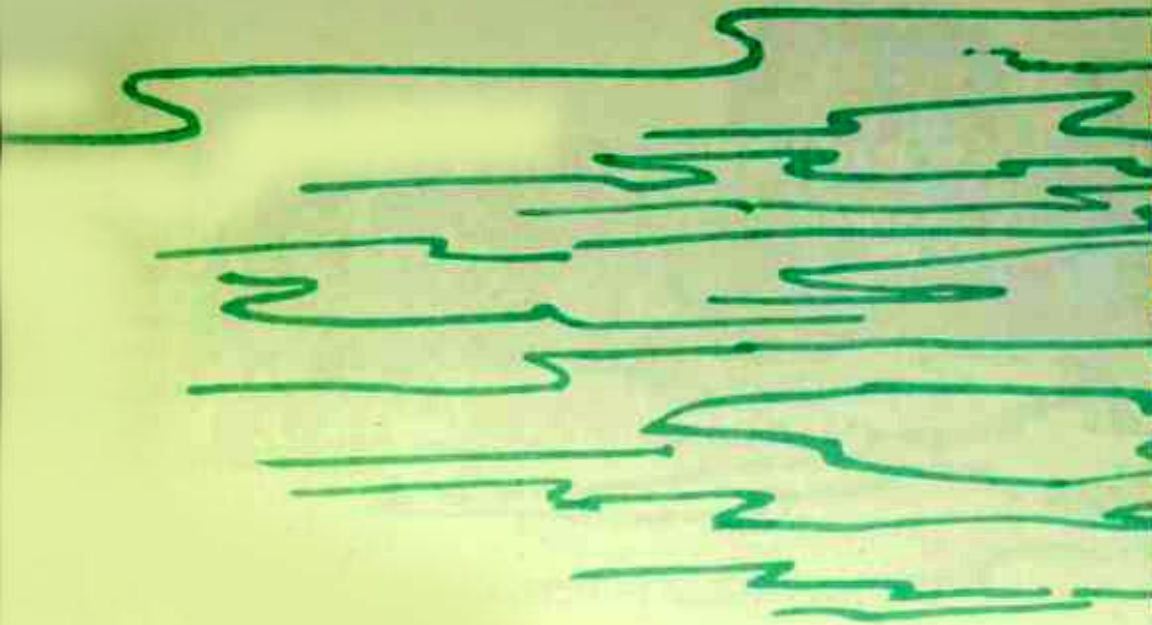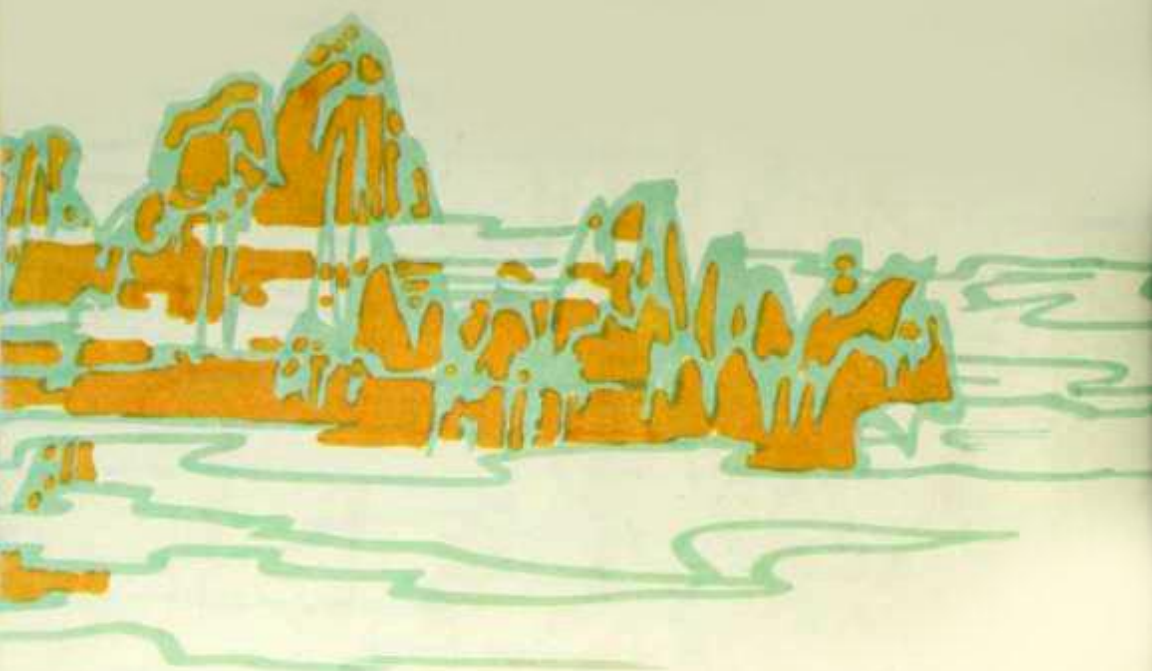
बहुत पुरानी बात है. चीन के लोयांग नगर पर एक शक्तिशाली राजा राज्य करता था. उसका नाम था त्साओ-त्साओ. 'चीन के सबसे महान शासक' के रूप में त्साओ-त्साओ की ख्याति चारों ओर फैली हुई थी.

लोयांग एक संपन्न राज्य था. राजा स्वयं एक विशाल और भव्य महल में रहता था. महल के चारों ओर सुन्दर बाग़ थे. दस हज़ार बहादुर सैनिक लोयांग और राजमहल की मुस्तैदी से रक्षा करते थे.
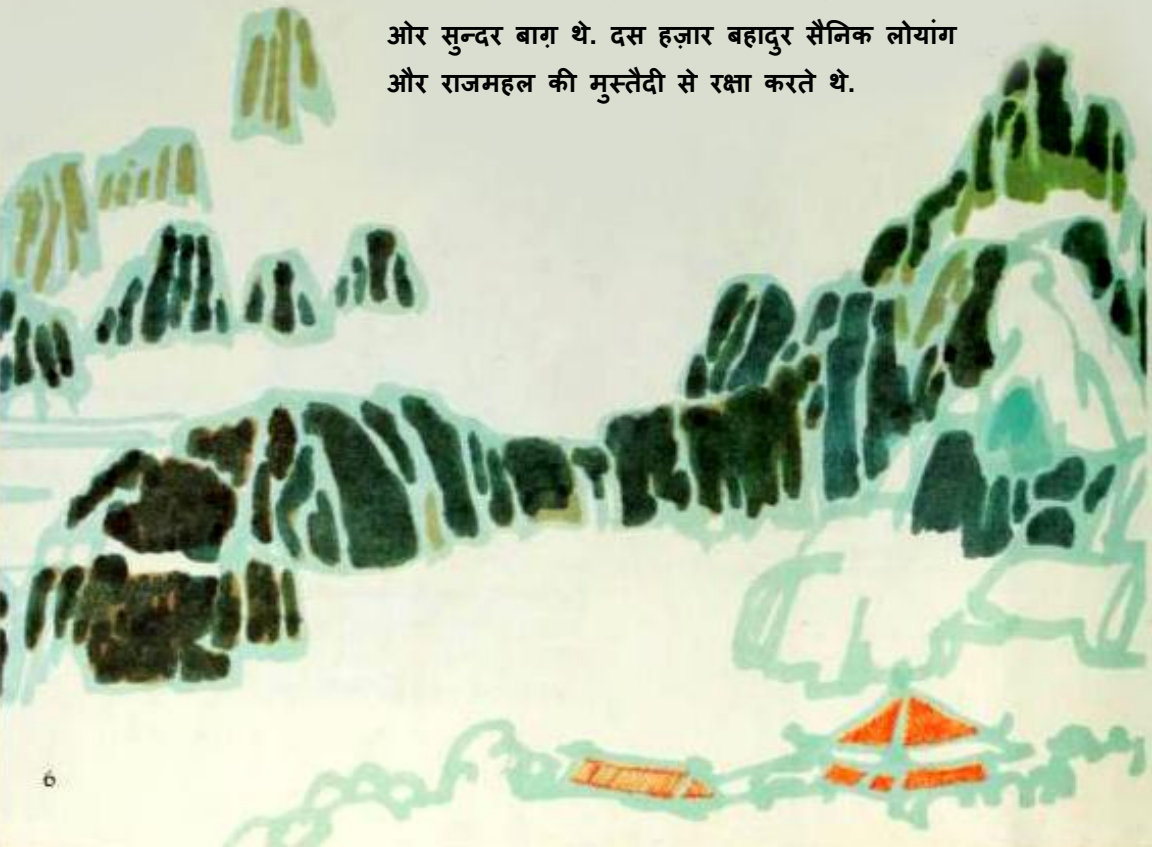
पड़ोसी देशों के राजा और राजकुमार अक्सर त्साओ-त्साओ की अद्भुत नगरी और उसका सुन्दर महल देखने के लिए लोयांग आया करते थे. कई राजा अपने दूत भेजते थे. त्साओ-त्साओ को भेंट देने के लिए यह दूत साथ में शानदार उपहार भी लाया करते थे.
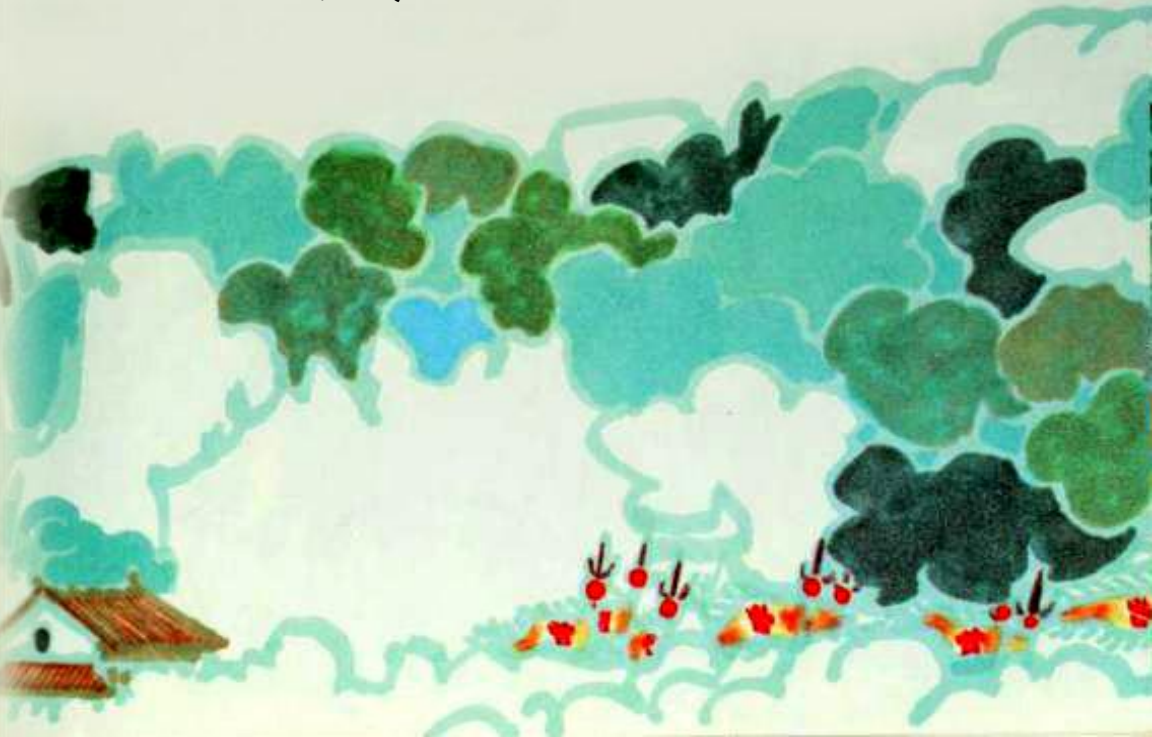
एक वर्ष भारत के एक राजा के दूत लोयांग आये. यह दूत एक बहुत ही अनोखा उपहार अपने साथ लाये थे. ऐसा अनोखा उपहार न तो त्साओ-त्साओ ने कभी पहले देखा था और न ही किसी लोयांग-वासी ने.

जैसे ही दूतों ने लोयांग नगरी में प्रवेश किया, लोग अपना काम-धंधा छोड़कर उस अद्भुत जीव को देखने दौड़े आये. राजा के दरबारी और राजकर्मी भी महल से बाहर आ गए.

नगर में कोलाहल मच गया. उस अनोखे जीव के चारों ओर भीड़ इकट्ठी हो गयी.
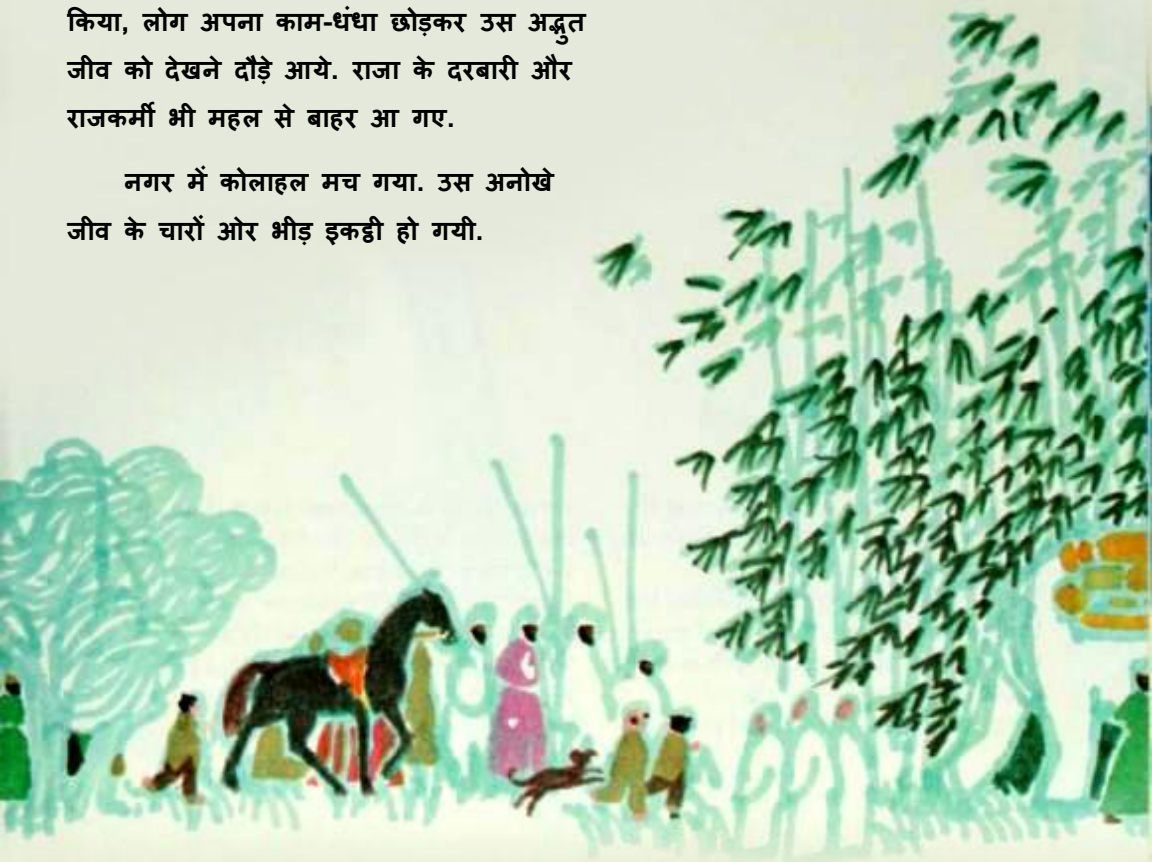
त्साओ-त्साओ भी महल से बाहर आया. भारत के राजा के दूतों ने झुककर उनका अभिवादन किया. वहां इकट्ठे हुए अन्य लोग भी झुककर खड़े हो गए.

राजा ने दूतों को आदेश दिया, “उठो और बताओ कि इतना हो-हल्ला क्यों मचा है? हमारे राज्य में यह अजीब पशु कहाँ से आ गया?”

“महाराज, यह भेंट हम लायें हैं,” एक दूत ने कहा, “चीन के सबसे महान शासक, त्साओ-त्साओ, के लिए यह उपहार हमारे महाराज ने भारत से भिजवाया है.”

“ओह...हाँ..” त्साओ-त्साओ बुदबुदाया. उसे याद आया कि वर्ष के इसी समय भारत का एक राजा उन्हें उपहार भेजा करता था.

“हम प्रसन्न हुए,” त्साओ-त्साओ ने दूत से कहा, “अपने महाराज को बताना कि हमें उनका उपहार बहुत पसंद आया. यह.....पर यह है क्या? इस जीव का नाम क्या है?”

“यह एक हाथी है, महाराज.”

त्साओ-त्साओ का पुत्र, राजकुमार पेई, भी वहां था. उसके हाथ में एक खिलौना था, एक नौका. वह भी आश्चर्य से हाथी को देख रहा था.

एक भारतीय दूत का बेटा, जुन्मा भी अपने पिता के साथ में आया था. उस लड़के के पास हाथीदांत का बना एक सुंदर हाथी था. जुन्मा ने अपना हाथी राजकुमार को दिखाया. राजकुमार ने उसे अपनी नाव दिखाई.

“हमारा हाथी कितना ऊँचा है?” त्साओ-त्साओ ने पूछा.

“चीन के महान शासक, इसकी ऊँचाई दस फुट है,” एक दूत ने कहा.

“और हमारे हाथी का वज़न कितना है?”

“महाराज, यह हम न बता पायेंगे. भारत में ऐसा कोई भी तराज़ू नहीं है जिस पर एक हाथी का वज़न तौला जा सके.”

“आपका तात्पर्य है कि आपके महाराजा भी यह नहीं जानते कि एक हाथी का वज़न कितना होता है?” त्साओ-त्साओ ने पूछा.

“यही सत्य है, महाराज.”

"आश्चर्य है."

राजकर्मी भारतीय दूतों को भोजन व विश्राम हेतु महल के अन्दर ले गए.

दूतों के जाते ही त्साओ-त्साओ ने अपने दरबारियों से कहा, "एक माह के बाद यह दूत भारत लौट जायेंगे. इनके जाने से पहले ही हम जानना चाहते हैं कि इस हाथी का वज़न कितना है.

अगर भारत के राजा एक हाथी को तौलना नहीं जानते तो हम, लोयांग के राजा और दस हज़ार सैनिकों के सेनापति, उन्हें हाथी को तौलने का उपाए बताएँगे. आप सब एक माह के भीतर इस हाथी को तौलने का तरीका ढूंढॅ निकालें."
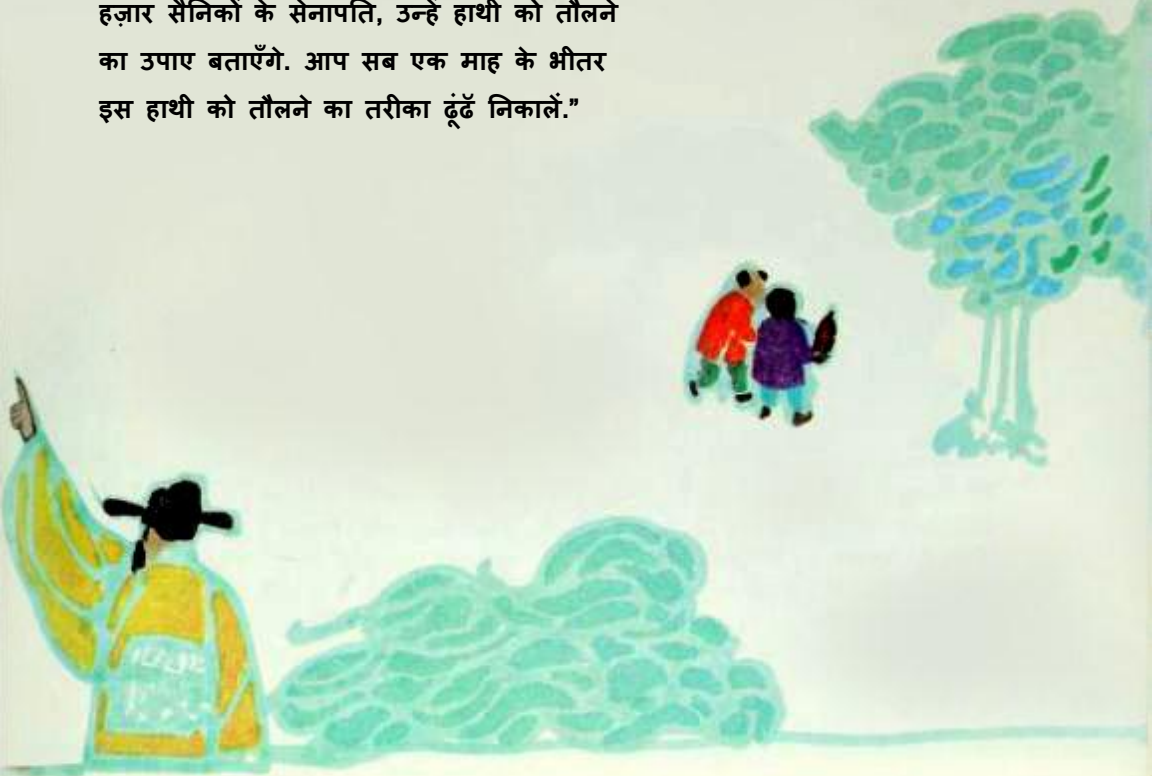
सब दरबारी सोच में पड़ गए:

'हाथी का वज़न कैसे तौला जा सकता है?'

'चीन के सबसे महान शासक के हाथी को कैसे तौलें?'

'इस हाथी को कैसे तौलें?'

पर खूब सोच-विचार करने पर भी उन्हें कोई रास्ता न सुझाई दिया. दूतों के भारत लौटने का समय निकट आ गया था. बस एक सप्ताह ही बचा था. सब दरबारी चिंतित थे.

एक दिन राजकुमार पेई अपनी नौका से खेलने के बाद, अद्भुत हाथी को देखने आया. उसने देखा कि दरबारी हाथी के नीचे उदास बैठे थे.

उसने आश्चर्य से पूछा, "आप लोग हाथी के नीचे क्यों बैठे हैं?"

“चुप......हम सोच रहे है.”

“आप क्या सोच रहे हैं?” राजकुमार ने धीमे से पूछा.

“हम सोच रहे हैं कि एक हाथी का वज़न कैसे तौला जा सकता है,” दरबारी ने भी धीमी आवाज़ में कहा.

“अरे, यह तो कोई कठिन काम नहीं है,” राजकुमार बोला.

“कठिन नहीं है.........” सब दरबारी एक साथ चिल्लाये.
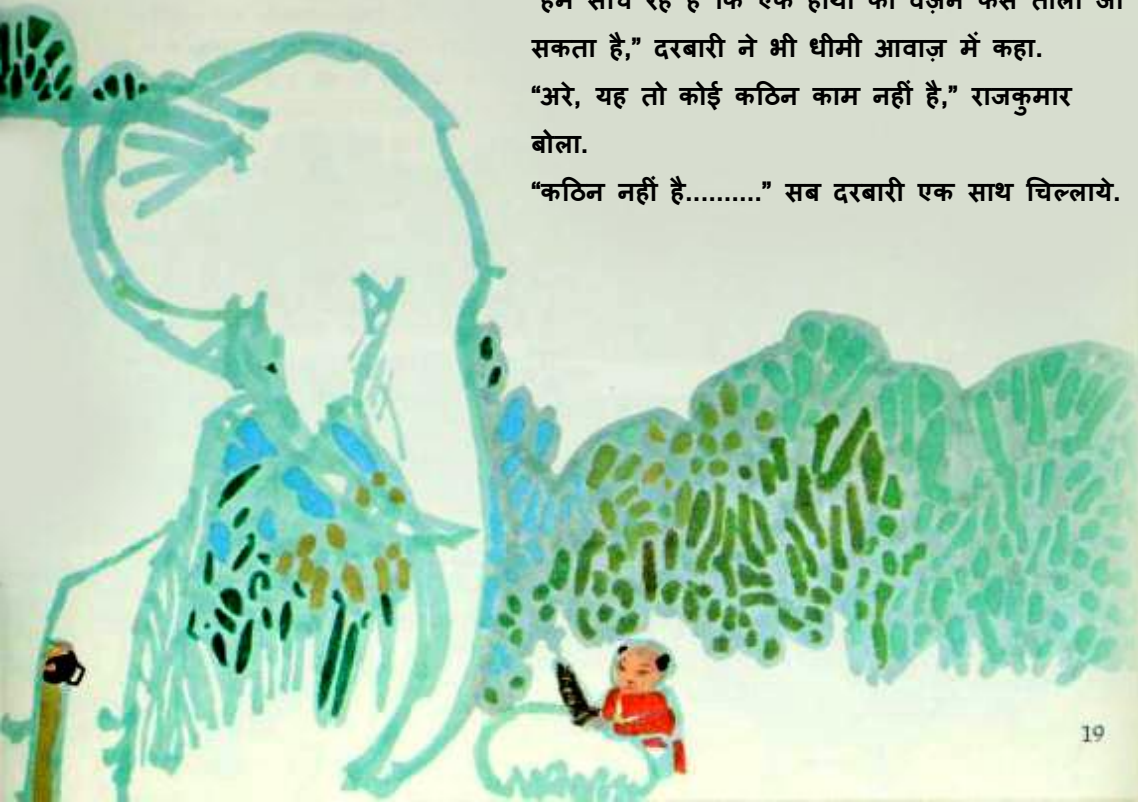
“हाँ, बिलकुल कठिन नहीं है. आइये, मेरे साथ और मैं आपको दिखाता हूँ कि हाथी को कितनी सरलता से तौला जा सकता है.”

राजकुमार दरबारियों को महल के निकट एक तालाब के पास ले आया. तालाब के पास राजकुमार की छोटी-सी नौका थी, एक खिलौना जिससे वह तालाब में खेला करता था. वैसे तो नौका साधारण सी थी लेकिन उसके एक तरफ एक लकीर बनी थी.

“आप सब यहाँ मेरी प्रतीक्षा करें,” इतना कह राजकुमार महल की ओर दौड़ा.

राजकुमार के जाते ही दरबारी नौका को उठाकर देखने लगे. नौका पर जो लकीर बनी थी उस के निकट चीनी भाषा में एक शब्द अंकित था. वह शब्द था ‘हाथी’.

‘इसका क्या अर्थ है?’ वह सोचने लगे.

पर खूब छानबीन करने पर भी कुछ समझ न पाये.

राजकुमार लौटकर आया तो उसके हाथ में हाथीदांत का बना एक हाथी था. यह जुन्मा ने उसे दिया था.

“ध्यान से देखिये,” उसने दरबारियों से कहा. इतना कहकर राजकुमार ने उस हाथी को नाव में रख दिया. नौका पानी में लकीर तक डूब गयी.

“देखा आपने, मैंने जितनी बार भी इस हाथी को नाव में रखा उतनी बार नाव उसी लकीर तक पानी में डूबी. तभी मैंने लकीर के पास ‘हाथी’ शब्द अंकित कर दिया. आप भी उस विशाल हाथी को इसी तरह तौल सकते हैं.

और अगर आप हाथी का सही वज़न जानना चाहते हैं तो नाव में पत्थर रख दें. नाव में तब तक पत्थर रखते जाएँ जब तक नाव उस लकीर तक डूब नहीं जाती."

"यही....यही उपाय है शाही हाथी का वज़न जानने का," सब दरबारी एक साथ ख़ुशी से चिल्लाये. "राजकुमार, आपने तो हमें सही रास्ता दिखा दिया."

जिस दिन हाथी को तौलना था उस दिन शाही झील के किनारे सब दरबारी इकट्ठे हो गए. कई नागरिक भी वहां आ पहुंचे. हाथी को एक बड़ी नाव पर चढ़ाया गया. राजकुमार और कुछ दरबारी एक छोटी नाव पर सवार हो गए.
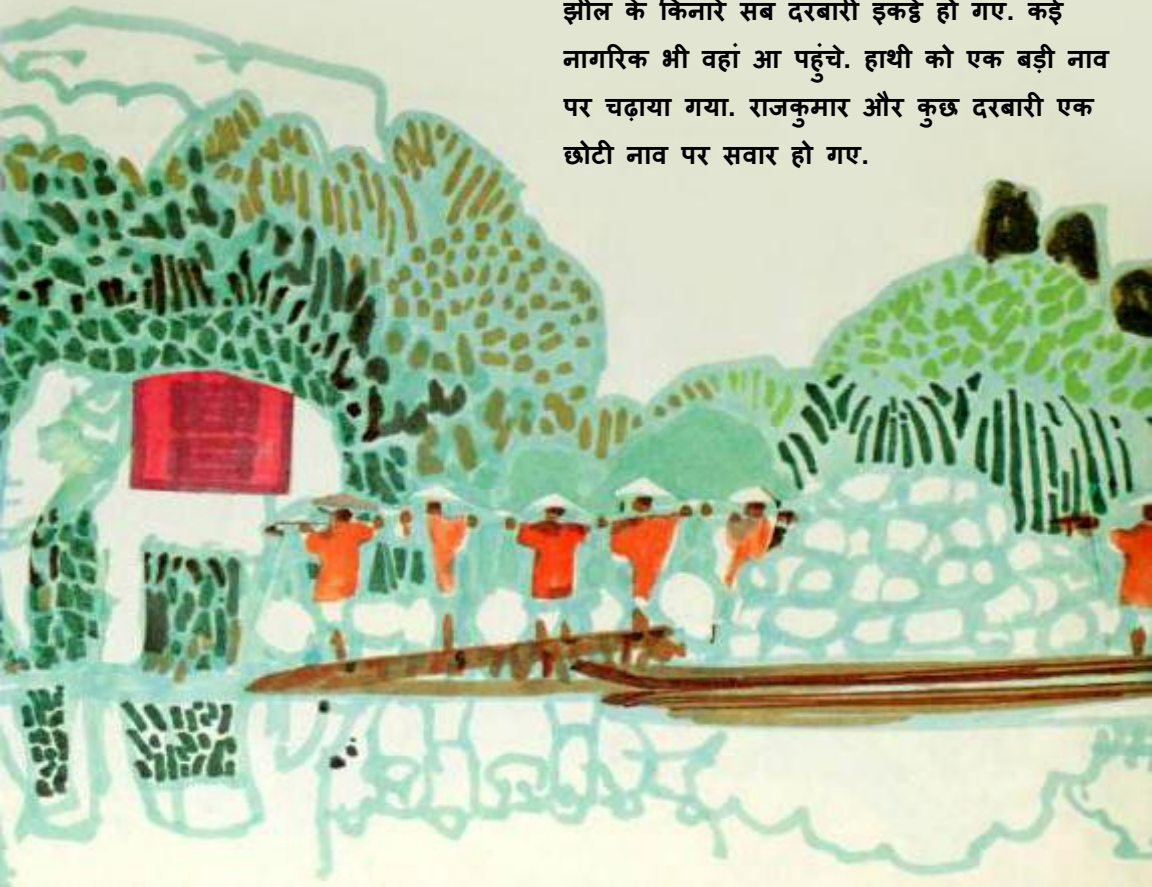
राजकुमार ने बड़ी नाव पर उस जगह एक निशान बनाया जिस स्तर तक वह पानी में डूबी थी. निशान के पास ही उसने चीनी भाषा में यह शब्द अंकित कर दिए, 'चीन के महान शासक का हाथी'.

फिर दोनों नावों को किनारे ले आया गया. हाथी को उतारकर, बड़ी नाव को फिर से पानी में धकेला गया. अब उस नाव पर एक-एक करके कई पत्थर रखे गए.

सैंकड़ों पत्थर रखने पर ही नाव उस निशान तक डूबी जो राजकुमार ने उस पर अंकित किया था. इस तरह उस शाही हाथी का वज़न तौला गया.

पर क्या तुम अनुमान लगा सकते हो कि उस हाथी का कितना वज़न था?

उस हाथी का वज़न 8000 पत्थर.

इस खबर की ख़ुशी में घड़ियाल बजाया गया.

शाही उद्घोषक ने सबको सूचित किया, “चीन के सबसे महान शासक के हाथी का वज़न है 8000 पत्थर.”

घोषणा सुन लोगों ने तालियाँ बजाईं और जय-जयकार की.

घड़ियाल फिर से बजाया गया. तब चीन के महान शासक, लोयांग के राजा ने आदेश दिया, “सबको सूचित किया जाए कि चीन के महान शासक के हाथी को तौलने का उपाय हमारे युवराज ने ही सुझाया था.”

सब ने फिर से ज़ोर से तालियाँ बजाईं और जय-जयकार की.

“यह बात हमारे शाही इतिहास में लिखी जाए और उसकी एक प्रति भारत से आये दूतों को दी जाए. वह उस वृत्तांत को अपने राजा को हमारी ओर से भेंट करेंगे.”

महान शासक के आदेश का पालन हुआ. राजकुमार की बुद्धिमता की गाथा शाही इतिहास में लिख दी गई. उसकी एक प्रति भारत भेजी गई.

महान शासक और लोयांग के राजा की प्रसिद्धि और भी फ़ैल गई, सिर्फ इस कारण नहीं कि उसके पास भव्य महल था और एक शक्तिशाली सेना थी. परन्तु इस कारण भी कि उसका पुत्र, राजकुमार पेई, सबसे बुद्धिमान और चतुर था.

कुछ वर्षों बाद वही बुद्धिमान पेई पूरे चीन का सम्राट बना. यह बात 2000 वर्ष पहले की है.